International Journal of Humanities, Commerce and Education
Volume 2 | Issue 7 | July 2026 | ISSN: 3108-0456 (Online)
Available online at: https://ijhce.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i7.112

हिन्दू धर्म में आत्महत्या एवं इच्छामृत्यु (PAS) का नैतिक विश्लेषण: भारत में महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक शोषण तथा आत्महत्या की प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

शैलेन्द्र सिंह[1], डॉ. विकास दीप कोहली[2]

[1]शोधकर्ता, एन.आई.आई.एल.एम, विश्वविद्यालय, कैथल हरियाणा

[2]शोध निर्देशक, निदेशक विधि संस्थान, एन.आई.आई.एल.एम, विश्वविद्यालय, कैथल हरियाणा

[1] **Email:** shailendrasinghllm@gmail.com

[2] **Email:** vikasdeep@niilmuniversity.ac.in

Received: 03 July 2026 | **Accepted:** 11 July 2026 | **Published:** 17 July 2026

Abstract (सारांश)

आत्महत्या और इच्छामृत्यु आज के युग में समाज के जटिल नैतिक, धार्मिक और सामाजिक विषयों में से एक है। हिन्दू धर्म सदैव से जीवन को पवित्र मानते हुए सामान्यतः आत्महत्या को अस्वीकार और निषेध करता है, जबकि कुछ विशिष्ट धार्मिक परम्पराओं में स्वैच्छिक मृत्यु के सीमित रूपों का उल्लेख भी मिलता है, दूसरी ओर, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में चिकित्सीय सहायता प्राप्त आत्महत्या (Physician Assisted Suicide PAS) पर विश्व स्तर पर नैतिक बहस जारी है। भारत में महिलाओं के विरुद्ध घरेलू हिंसा, मानसिक उत्पीड़न, दहेज प्रथा, सामाजिक असमानता तथा लैंगिक भेदभाव जैसी कुरीतियों ने अनेक बार आत्महत्या की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है। यह शोध पत्र हिन्दू धर्म की नैतिक शिक्षा, इच्छामृत्यु के विचार को तथा महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक शोषण के मध्य संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि आत्महत्या किसी व्यक्ति का व्यक्तिगत निर्णय नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों का परिणाम भी हो सकती है। जिसका असर वर्तमान समाज में दिखाई देता है।

मुख्य शब्द: *हिन्दू धर्म, आत्महत्या, इच्छामृत्यु, चिकित्सीय सहायता प्राप्त आत्महत्या PAS, पयोपवेश, महिला शोषण, घरेलू हिंसा, नैतिकता*

प्रस्तावना-

आत्महत्या एक विश्वव्यापी सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है, भारत में यह समस्या विशेष रूप से युवाओं और महिलाओं के संदर्भ में गंभीर सामाजिक चुनौती के रूप में उभर कर सामने आयी है। आत्महत्या के कारक में केवल मानसिक रोग शामिल नहीं होता, बल्कि सामाजिक दबाव, आर्थिक कठिनाइयाँ, पारिवारिक संघर्ष और लैंगिक असमानताएँ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। (राणे और नाडकर्णी, 2014) अक्सर समाज में यह देखा गया है कि महिलाओं के विरुद्ध घरेलू हिंसा और मानसिक प्रताड़ना आत्मघाती विचारों में तीव्रता ला सकती है। विकसित देशों की तुलना में विकास शील देशों में आत्महत्या जैसी समस्या में वृद्धि है, भारत में कम उम्र की महिलाओं में आत्महत्या अधिक प्रचलित है1 हिन्दू धर्म जीवन को ईश्वर का वरदान मानता है और मनुष्य के जीवन को धर्म, कर्म तथा मोक्ष की प्राप्ति का साधन भी समझता है। इसलिए आत्महत्या और इच्छामृत्यु के प्रश्न केवल कानूनी या चिकित्सकीय नहीं बल्कि गहन नैतिक एवं आध्यात्मिक महत्व रखते हैं।

हिन्दू धर्म में जीवन और मृत्यु की अवधारणा

प्राचीन हिन्दू दर्शन के अनुसार आत्मा का अस्तित्व है और वो अमर है जबकि पृथ्वी पर शरीर नश्वर है, भगवद्गीता में आत्मा को अविनाशी बताया गया है। कर्म सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का फल भोगता है और जन्म-मृत्यु का चक्र इसी

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJHCE Published by Surya Multidisciplinary Publication.

सिद्धान्त द्वारा संचालित होता है। हिन्दू धर्म में जीवन को धर्म पालन और आत्मोन्नति का अवसर माना गया है। इसलिए सामान्य परिस्थितियों में आत्महत्या को धर्म विरुद्ध माना जाता है क्योंकि यह जीवन के नैतिक दायित्वों से पलायन के रूप में देखी जाती है।

हिन्दू धर्म और आत्महत्या

प्राचीन हिन्दू परम्परा आत्महत्या को सामान्यतः अनुचित मानती रही है। धार्मिक साहित्य के अध्यन से यह बात समझ में आती है कि आत्महत्या व्यक्ति के कर्मचक्र को बाधित कर सकती है, यद्यपि कुछ विशेष परिस्थितियों जैसे प्रायोपवेश को सामान्य आत्महत्या से भिन्न माना गया है। प्रायोपवेश में व्यक्ति आध्यात्मिक तैयारी और वैराग्य की अवस्था में स्वेच्छा से भोजन, जल का त्याग करता है। (श्रीमद्भगवद्गीता, 2016). हिंदू कानून में प्रायोपवेश के लिए कुछ नियम निर्धारित हैं, जैसे सामान्य शारीरिक शुद्धिकरण करने में असमर्थता जाहिर करता है, मृत्यु निकट दिखती है या स्थिति इतनी खराब है कि जीवन के सुखों का कोई महत्व नहीं रह गया है। प्रयोपवेश का निर्णय सार्वजनिक रूप से घोषित किया जाता है तथा यह कार्रवाई सामुदायिक नियमों के तहत की जानी चाहिए। प्रायोपवेश का एक उदाहरण कैलिफोर्निया में हिंदू नेता सतगुरु शिवया सुब्रमण्यम स्वामी ने नवंबर 2001 में प्रायोपवेश करके आत्महत्या कर ली। जब सतगुरु को पता चला कि उन्हें लाइलाज आंतों का कैंसर है, तो उन्होंने कई दिनों तक ध्यान किया और फिर घोषणा की कि वे केवल दर्द निवारक उपचार स्वीकार करेंगे और प्रायोपवेस का पालन करेंगे यानी पानी लेंगे, लेकिन भोजन नहीं करेंगे। उन्होंने अपने स्वैच्छिक उपवास के 32वें दिन दम तोड़ दिया। (BBC, 2025) आधुनिक विद्वानों के अनुसार प्राचीन हिन्दू धर्म का दृष्टिकोण पूरी तरह एक समान नहीं रहा है, इसमें सामान्य रूप से आत्महत्या की निन्दा की गयी है किन्तु कुछ धर्म मृत्यु-परम्पराओं को स्वीकार करते है।(गरुड़ पुराण, 2022)

इच्छामृत्यु एवं चिकित्सीय सहायता प्राप्त आत्महत्या

इच्छामृत्यु एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें असाध्य रोग या असहनीय पीड़ा की स्थिति में जीवन को समाप्त किया जाता है या मृत्यु को चिकित्सा संबंधी निर्णयों के माध्यम से उचित और संभव बनाया जाता है। (PAS) चिकत्सीय सहायता प्राप्त आत्महत्या में चिकित्सक व्यक्ति को ऐसा साधन उपलब्ध कराता है जिससे वह स्वयं मृत्यु का चयन कर सके। हिन्दू नैतिकता में इस विषय पर मतभेद पाए जाते हैं। एक ओर जीवन की पवित्रता पर बल दिया जाता है, दूसरी ओर कुछ विचारधाराएँ अत्यधिक कष्ट की स्थिति में करुणा को भी नैतिक मूल्य मानती हैं। आधुनिक भारतीय सामाजिक और कानूनी व्यवस्था सामान्यतः PAS को स्वीकार नहीं करती। (Shanghai, 2014)

भारत में महिलाओं का शारीरिक एवं मानसिक शोषण

भारतीय समाज में अनेक महिलाएँ घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न, भावनात्मक नियंत्रण, आर्थिक निर्भरता तथा सामाजिक भेदभाव का सामना करती हैं। घरेलू हिंसा का प्रभाव केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रहता बल्कि मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव डालता है जैसा कि हिंसा झेलने वाली महिलाओं में अवसाद, चिंता, आत्महीनता तथा आत्महत्या के विचार अपेक्षाकृत अधिक उत्पन्न होते हैं। घरेलू हिंसा और आत्मघाती व्यवहार के बीच महत्वपूर्ण संबंध स्थापित किया गया है। घरेलू हिंसा का सामना कर रही महिलाओं में काम करने की इच्छा न होना और डिप्रेशन के लक्षण जैसे उदासी, हीन भावना और उदासीनता भी देखे गए।

महिलाओं की आत्महत्या-प्रवृत्ति: सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

महिलाओं की आत्महत्या को केवल व्यक्तिगत कमजोरी या मानसिक रोग के परिणाम के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए इसके पीछे निम्न कारक कार्य करते हैं, घरेलू हिंसा, दहेज प्रताड़ना, वैवाहिक असंतोष, सामाजिक नियंत्रण, आर्थिक निर्भरता, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की कमी महिला आत्महत्या पर किए गए नृवंशशास्त्रीय अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि विवाहोपरांत पारिवारिक दबाव कई मामलों में आत्मघाती व्यवहार की पृष्ठभूमि तैयार करता है। (सैनी, 2023)

नैतिक विश्लेषण

हिन्दू प्राचीन धर्म की दृष्टि से आत्महत्या (देह त्याग) जीवन के मूल्यों को नष्ट करती है। किन्तु यदि कोई महिला लम्बे समय से हिंसा, अपमान और मानसिक पीड़ा का सामना कर रही हो, तो समस्या केवल धार्मिक या व्यक्तिगत नहीं रहती, बल्कि सामाजिक न्याय का प्रश्न बन जाती है। इस संदर्भ में नैतिक उत्तरदायित्व केवल व्यक्ति का नहीं बल्कि परिवार, समुदाय और राज्य का भी बराबर से हो जाता है। यदि सामाजिक संरचनाएँ महिलाओं को सम्मानजनक जीवन प्रदान करने में विफल रहती हैं, तो आत्महत्या की घटनाओं को केवल व्यक्तिगत निर्णय मानना अधूरा दृष्टिकोण होगा इस लिए यह नैतिक और विधिक रूप से अमान्य होना चाहिए और इस विषय पर समाज और विधि वेत्ताओं को चिकित्सकों की मदद के साथ गहन अध्यन करना चाहिए ।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान समय और परिस्थितियों में देखा जा रहा है कि महिलाओं में बढ़ती मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियाँ इतनी जटिल है कि इनको बड़ी सावधानी से अध्यन कर निस्तारित करने कि आवश्यकता है साथ ही धर्म और नैतिकता की भूमिका का भी इसमें महत्वपूर्ण स्थान है ताकि प्राचीन हिन्दू धर्म कि मान्यताओं को सुरक्षित रखा जा सके 1 PAS पर वैश्विक बहस और भारतीय संदर्भ का तुलनात्मक अध्यन आवश्यक है जिससे भारतीय दर्शन और परम्परा को सुरक्षित रखते हुए चिकित्सीय सहायता प्राप्त आत्महत्या के विचार को एक निष्कर्ष पर ले जाया जा सके 1

शोध उद्देश्य (Objectives)-

1.हिन्दू धर्म में आत्महत्या की अवधारणा का अध्ययन करना ।

2. इच्छामृत्यु और PAS के नैतिक और कानूनी दृष्टिकोण का विश्लेषण करना ।

3. भारत में महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक शोषण और आत्महत्या की बढती प्रवृत्ति के बीच संबंध का विश्लेषण करना ।

4. धार्मिक शिक्षाओं और सामाजिक नीतियों के बीच संतुलन स्थापित करने का नया तरीका समझना।

शोध प्रश्न (Research Questions)-

1. प्राचीन हिन्दू धर्म आत्महत्या को किस दृष्टि से देखता है?

2. चिकित्सीय सहायता प्राप्त आत्महत्या (PAS) और इच्छामृत्यु के संबंध में हिन्दू नैतिक दृष्टिकोण क्या है?

3. भारत में महिलाओं का शारीरिक एवं मानसिक शोषण आत्महत्या की प्रवृत्ति को किस तरह से प्रभावित करता है?

4. क्या धार्मिक मूल्य आत्महत्या जैसी समस्या के निवारण में सहायक हो सकते हैं?

परिकल्पना (Hypothesis)-

H1: समाज में महिलाओं के विरुद्ध शारीरिक एवं मानसिक शोषण आत्महत्या प्रवृत्ति को बढ़ाता है।

H2: प्राचीन हिन्दू धर्म जीवन की पवित्रता के आधार पर सामान्य/विशुद्ध आत्महत्या का विरोध करता है।

H3: चिकित्सीय सहायता प्राप्त आत्महत्या (PAS) के प्रति हिन्दू दृष्टिकोण पूरी तरह से एक मत नहीं है, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार विविध मामलों में अलग अलग द्रष्टिकोण रखता हैं।

शोध पद्धति

इस शोध पत्र में शोधार्थी द्वारा अध्यन के निम्न प्रकारों का इस्तेमाल किया गया है जिसमे प्रमुख रूप से गुणात्मक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक हैं 1 इस शोध में द्वितीयक डेटा श्रोतों के माध्यम से तथ्यों, आंकड़ों और संसूचनाओ को एकत्रित किया गया है जिसमे पुस्तकें, शोध-पत्र, सरकारी रिपोर्टें, न्यायालयीय निर्णय तथा धार्मिक ग्रंथ ग्रन्थ शामिल हैं1 विश्लेषण पद्धति के रूप में सम्पूर्ण विषय की विषयवस्तु विश्लेषण एवं तुलनात्मक अध्ययन का प्रयोग किया गया है 1 शोध पत्र में सीमाओं का ध्यान रकते हुए अध्ययन को मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर निर्भर किया गया है परन्तु सीमाओं को देखते हुए सभी धार्मिक परम्पराओं का विस्तृत विश्लेषण संभव नहीं 1

शोध विश्लेषण

हिन्दू धर्म में जीवन, मृत्यु और आत्मा की अवधारणा के अनतेरगत आत्मा के सिद्धांत में या बात प्रमुख है कि आत्मा का अस्तित्व है आत्मा की अमरता कि अमरता पर कोई सवाल खड़ा करना एक सामाजिक और धार्मिक विवाद को जन्म देगा यद्यपि समाज ने शरीक के बारे में पहले से ही स्वीकार कर रखा है कि शरीर नश्वर है 1 कर्म और पुनर्जन्म कि बात करें तो कर्मफल सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति को अपने कर्मो के अनुसार ही मोक्ष कि प्राप्ति होती है जबकि जीवन का आध्यात्मिक उद्देश्य अत्मा कि शुद्धि में कर्म का महत्वपूर्ण योगदान है 1 प्राचीन हिन्दू धर्म के अनुसार जीवन की पवित्रता धर्म के पालन और मोक्ष प्राप्ति में निहित है 1 मृत्यु का धार्मिक महत्व प्राकृतिक मृत्यु में निहित है योगी पुरुष या स्त्री आध्यात्मिक मृत्यु की अवधारणा कर सकती है 1 प्राचीन हिन्दू धर्म और आत्महत्या का नैतिक विश्लेषण करें तो आत्महत्या को सामाजिक बुराई के रूप में शामिल किया गया है वहीँ चिकित्सीय सहयता प्राप्त आत्महत्या के विषय पर अभी समाज कि पूरी राया स्पष्ट नहीं है प्रायोपवेश और सामान्य आत्महत्या को समाज में नैतिक स्वीकृति प्राप्त है 1 समकालीन व्याख्याओं में इच्छामृत्यु एवं चिकित्सीय सहायता प्राप्त आत्महत्या PAS, धार्मिक, नैतिक और कानूनी विमर्श कि उलझनों में उलझा हुआ है जिसमे इच्छामृत्यु की अवधारणा में सक्रिय इच्छामृत्यु और निष्क्रिय इच्छामृत्यु महत्वपूर्ण है भारत में इच्छामृत्यु की कानूनी स्थिति कामन कॉज बनाम भारत संघ मामले के निर्णय में स्पष्ट की गयी है। (विजयकुमार, एल., एवं जॉन, 2014)

शोध निष्कर्ष

इस शोध पत्र केअध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दू धर्म जीवन की पवित्रता पर बल देता है और सामान्य आत्महत्या को स्वीकार नहीं करता। चिकित्सीय सहायता प्राप्त आत्महत्या PAS और इच्छामृत्यु पर मतभेद होने के बावजूद जीवन की गरिमा एक केंद्रीय मूल्य बनी रहती है। भारत में महिलाओं के विरुद्ध शारीरिक एवं मानसिक शोषण आत्महत्या प्रवृत्ति के महत्वपूर्ण कारणों में से है। इसलिए आत्महत्या निवारण के लिए धार्मिक, सामाजिक, कानूनी और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी उपायों का समन्वित दृष्टिकोण आवश्यक है। हिन्दू धर्म सामान्यतः आत्महत्या का विरोध करता है और जीवन की पवित्रता पर बल देता है। इच्छामृत्यु और चिकित्सीय सहायता प्राप्त आत्महत्या PAS के प्रश्न पर धार्मिक एवं नैतिक मतभेद विद्यमान हैं। भारत में महिलाओं के विरुद्ध शारीरिक और मानसिक शोषण आत्महत्या की प्रवृत्ति को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण सामाजिक कारकों में से एक है। अतः आत्महत्या निवारण के लिए केवल धार्मिक शिक्षा पर्याप्त नहीं है, इसके साथ घरेलू हिंसा की रोकथाम, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, लैंगिक समानता तथा सामाजिक समर्थन तंत्र को भी सुदृढ़ करना आवश्यक है।

संदर्भ

[1]. Vijayakumar, L., & John, S. (2018). Is Hinduism ambivalent about suicide? *International Journal of Social Psychiatry, 64*(5), 443–449. https://doi.org/10.1177/0020764018777523

[2]. Rane, A., & Nadkarni, A. (2014). Suicide in India: A systematic review. *Shanghai Archives of Psychiatry, 26*(2), 69–80. https://doi.org/10.3969/j.issn.1002-0829.2014.02.003

[3]. Rane, A., & Nadkarni, A. (2014). Suicide in India: A systematic review. *Shanghai Archives of Psychiatry, 26*(2), 69–80. https://doi.org/10.3969/j.issn.1002-0829.2014.02.003

[4]. श्रीमद्भगवद्गीता। (2016). गोरखपुर: गीता प्रेस।

[5]. सैनी, स. (2023, जून 4). गरुड़ पुराण: हिंदू धर्म में आत्महत्या को क्यों माना गया है महापाप, इससे और बढ़ जाती हैं आत्मा की परेशानियां। *दैनिक जागरण*।

[6]. BBC News हिन्दी. (2009, अगस्त 25). इच्छामृत्यु, सहायता प्राप्त मृत्यु और आत्महत्या। BBC हिन्दी।

[7]. Fonseca-Machado, M. O., Alves, L. C., Monteiro, J. C. S., Gomes-Sponholz, F. A., & Stefanello, J. (2018). Domestic violence and warning signs of suicide in women. *SMAD: Revista Eletrônica Saúde Mental Álcool e Drogas, 14*(4), 219–225.

[8]. विकिपीडिया. आत्महत्या पर धार्मिक विचार। *विकिपीडिया, मुक्त विश्वकोश*। पुनर्प्राप्ति तिथि 17 जुलाई, 2026, से।

Cite this Article:

शैलेन्द्र सिंह, विकास दीप कोहली. (2026). हिन्दू धर्म में आत्महत्या एवं इच्छामृत्यु (PAS) का नैतिक विश्लेषण: भारत में महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक शोषण तथा आत्महत्या की प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन. International Journal of Humanities, Commerce and Education, 2(7), 5–9.

Journal URL: *https://ijhce.com/* ***DOI****: https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i7.112*

Disclaimer/Publisher's Note*: The author(s) are solely responsible for the content and claims of this article. The publisher and editors assume no legal liability for any errors, copyright violations, or damages arising from its use.*